प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए
सत्र 18: चेला चुनना (9क)

रॉन लाइवली, एम.डिवी., एमए द्वारा ऑफ़र किया गया - BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: प्रत्येक व्यक्ति स्मृति कविता को उद्धृत करता है: छंद चरण: **मैथ्यू 4: 19-20**
19 और उसने उनसे कहा, "मेरे पीछे हो लो, और मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुआरे बनाऊंगा।
20 तुरन्त वे अपने जाल छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

चरण 3: *बाइबल अध्याय के सभी या कुछ हिस्सों को पढ़ें और चर्चा करें* **– मैथ्यू 4**

चरण 4: व्यक्तिगत अनुप्रयोगों और/या समूह चर्चा के लिए प्रश्न:

एक. खेलों में सही खिलाड़ियों का चयन लगभग हमेशा जीत की ओर ले जाता है। यह शिष्यत्व प्रशिक्षण पर कैसे लागू होता है?

दो. ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु ने अपने बारह शिष्यों को केवल उन्हीं शिष्यों में से चुना जिन्हें वह जानता था कि जो उसका अनुसरण करने के इच्छुक थे। क्या आप देख सकते हैं कि यह उन लोगों पर कैसे लागू होता है जिन्हें हम प्रशिक्षित करने के लिए चुनते हैं?

तीन. इस सत्र में, हम एक उच्च मानक स्थापित करना और लगन से प्रार्थना करना सीखेंगे जैसा कि यीशु ने अपने शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए चुनने में किया था।

चार. हम शिष्य की पांच विशेषताओं के बारे में अध्ययन करेंगे। आइए पूछें कि क्या सभी पांच समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

पाँच. हमें यह समझना चाहिए कि प्रशिक्षित करने के लिए शिष्य के चुनाव में परमेश्वर का मार्गदर्शन अनिवार्य है क्योंकि वह किसी के हृदय को देखता है जो हम नहीं कर सकते हैं, इसलिए हमें अन्य योग्यताओं को देखना होगा।

चरण 5: *पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*

अध्याय **9 ए** लेखक के अनुसार - कीथ फिलिप्स:

एक शिष्य चुनना

जब मैं छोटा था तब सैंडलॉट बेसबॉल मेरे पड़ोस में गुस्से में था। हर शनिवार की दोपहर हम में से आठ टीमों में विभाजित हो जाते थे और तब तक खेलते थे जब तक कि देखने में बहुत अंधेरा न हो जाए। मेरे सप्ताहांत की सफलता अक्सर मेरे साथियों की गुणवत्ता से निर्धारित होती थी। सही खिलाड़ियों का चयन लगभग हमेशा जीत की ओर ले जाता था। आप जिस व्यक्ति को शिष्य बनाएंगे उसका चयन महत्वपूर्ण है। निम्नलिखित सिद्धांत व्यक्तिगत अनुभव से विकसित हुए हैं और मेरा मानना है कि वे एक शिष्य चुनने में अपरिहार्य हैं।

एक उच्च मानक सेट करें

यीशु ने मनुष्यों के मछुआरे केवल उन लोगों में से बनाए जो उसका अनुसरण करने के इच्छुक थे (मत्ती 4:19)। उसने मांग की कि उसके शिष्य उसका अनुसरण करने के लिए अपना सब कुछ छोड़ दें, यहाँ तक कि अपना जीवन भी, यदि आवश्यक हो, तो उसका अनुसरण करने के लिए। उन्हें उसके मानक को पूरा करना था। पांच विशेषताएँ आपको एक संभावित शिष्य की पहचान

करने में मदद करेंगी:

1. वह परमेश्वर को गहराई से जानना चाहता है
उसकी सिखाने योग्य आत्मा परमेश्वर के लिए उसकी भूख और धार्मिकता की प्यास को इंगित करती है। वह "मसीह और उसके पुनरुत्थान की शक्ति और उसके कष्टों में भाग लेने की संगति को जानने की कोशिश करता है, उसकी मृत्यु में उसके समान बन जाता है ..." (फिलिप्पियों 3:10)। परमेश्वर के प्रति उसकी निरंतर आज्ञाकारिता उसकी आत्म-मृत्यु को प्रदर्शित करती है (याकूब 1:22-25)। परमेश्वर ने कहा है, "बुद्धिमान मनुष्य अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, और पराक्रमी अपनी शक्ति पर घमण्ड न करे, कोई धनी अपने धन पर घमण्ड न करे; परन्तु जो घमण्ड करे, वह इस बात पर घमण्ड करे, कि वह मुझे समझता और जानता है..." (यिर्मयाह 9:23,24)।

2. वह उपलब्ध है
जब भी अवसर मिलता है, वह आपके साथ रहने के लिए तैयार और उत्सुक होता है। उसकी उपलब्धता दर्शाती है कि वह आपके रिश्ते को कितनी प्राथमिकता देता है। हम हमेशा उन चीजों के लिए समय निकालते हैं जो हमें लगता है कि महत्वपूर्ण हैं। मसीह के शिष्यों ने उनके साथ रहने के लिए अपना काम छोड़ दिया। उनकी उपलब्धता ने उनकी प्रतिबद्धता को साबित किया।

3. वह विनम्र है
वह महसूस करता है कि परमेश्वर एक टूटी हुई आत्मा से कम कुछ भी स्वीकार नहीं करता है (भजन संहिता 51:17)। उसकी भेद्यता और पारदर्शी संचार परमेश्वर और आप में उसके भरोसे को प्रदर्शित करता है। आपके लिए उसकी दासता और प्रेम आपकी परिपक्वता के प्रति उसके समर्पण और सम्मान को दर्शाता है। यदि वह आपकी सेवा करता है, तो वह शायद आपका व्यक्ति है। पौलुस ओनेसिफरस को बहुत मानता था क्योंकि वह अक्सर तरोताजा और बेशर्मी से पौलुस की सेवा करता था (2 तीमुथियुस 1:16-18)।

4. वह वफादार है
वह अपनी मसीही प्रतिबद्धता, अपनी नियमित जिम्मेदारियों और परमेश् वर के प्रति अपने प्रेम में सुसंगत है। "अब यह अपेक्षा की जाती है कि जिन लोगों को भरोसा दिया गया है, वे विश् वासयोग्य ठहरें" (1 कुरिन्थियों 4:2)। परमेश् वर की आत्मा विश् वासयोग्यता को इतना अधिक महत्व देती है कि उसने पौलुस को यह निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण घटक बनाने के लिए प्रेरित किया कि किन लोगों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए (2 तीमुथियुस 2:2)।

5. वह शिष्य बनना चाहता है
वह समझता है कि एक परिपक्व ईसाई को दूसरों को अनुशासित करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। वह प्रभु में बढ़ने की इच्छा रखता है ताकि वह दूसरों में मसीह को पुन: उत्पन्न करके परमेश्वर की महिमा कर सके।

ये पांच मानदंड बहुत ऊंचे लग सकते हैं। लेकिन आपको जो गुणवत्ता प्राप्त होती है वह आपके द्वारा मांगे जाने वाले मानक से निर्धारित होती है। यदि आप सामान्यता स्वीकार करेंगे, तो आपको यही मिलेगा। हर साल हमारे निदेशक नए कर्मचारियों को स्वीकार करने के दिशानिर्देशों की समीक्षा करते हैं। निरपवाद रूप से, जब हम आवश्यकताओं को सख्त करते हैं, तो उम्मीदवारों की गुणवत्ता में काफी सुधार होता है। उच्च मानक स्थापित करने से डरो मत।

लगन से प्रार्थना करें

यीशु ने अपने शिष्यों को केवल तब चुना जब "... उसने पूरी रात परमेश्वर से प्रार्थना में बिताई" (लूका 6:12)। पिता ने यीशु को उतावले पतरस की क्षमता को देखने के लिए अंतर्दृष्टि दी, जिसे "कैफा," चट्टान कहा जाएगा (यूहन्ना 1:42)। निंदक नतनएल के पीछे, उसने एक ऐसे व्यक्ति के चरित्र को देखा "जिसमें कोई छल नहीं है" (यूहन्ना 1:47)। शिष्य के चुनाव में परमेश्वर का मार्गदर्शन अनिवार्य है। "... मनुष्य बाहरी रूप को देखता है, परन्तु प्रभु मन को देखता है" (1 शमूएल 16:7)। ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे आप किसी को अपने आप में मरने और अनुशासनात्मक रिश्ते में प्रवेश करने के लिए लुभा सकते हैं। यीशु ने सिखाया, "कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक कि पिता जिसने मुझे भेजा है वह उसे खींच न ले..." (यूहन्ना 6:44)। केवल परमेश्वर ही एक व्यक्ति को चेला बनने और दूसरों में मसीह के समान चरित्र को पुन: उत्पन्न करने के लिए तैयार कर सकता है। परमेश्वर ने स्वयं कहा, "... मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग कर दो जिसके लिए मैं ने उन्हें बुलाया है" (प्रेरितों के काम 13:2)। यहां तक कि मसीह के शिष्य भी परमेश्वर के द्वारा उसे दिए गए थे (यूहन्ना 17:6)। शिष्य का चयन मेहनती प्रार्थना की मांग करता है। अपने आध्यात्मिक नेताओं के साथ मिलकर परमेश्वर से आपको उस व्यक्ति की ओर निर्देशित

करने के लिए कहें जिसे वह चाहता है कि आप चेला बनें।

पेज 87-90

चरण 6: *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोधों को साझा करें फिर प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के अनुरोधों के लिए प्रार्थना करता है।*

स्रोत: द मेकिंग ऑफ ए डिसाइपल डॉ . कीथ फिलिप्स द्वारा। फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी द्वारा, 1981। आई°ऍस°बी°ऍन° 0-8007-1181-5. रॉबर्ट ई. कोलमैन द्वारा परिचय। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) बिना किसी संशोधन के पुस्तक से ली गई है।

संशोधित 20261012